International Journal of Research and Technology (IJRT)

International Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed, Online Journal

ISSN (Print): 2321-7510 | ISSN (Online): 2321-7529

Conference "Innovation and Intelligence: A Multidisciplinary Research on Artificial Intelligence and its Contribution to Commerce and Beyond"-
Organized by the IQAC, KHMW College of Commerce (December 2025)

# चित्रित समाज: हिंदी साहित्य में कार्टून और व्यंग्य की भूमिका

## ऊषा रानी

हिंदी विभाग, ओम स्ट्रलिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा

**सारांश :** यह शोधपत्र हिंदी साहित्य में कार्टून और व्यंग्य की भूमिका का विश्लेषण करता है। 2015 से 2024 के बीच प्रकाशित प्रमुख साहित्यिक रचनाओं, पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के संदर्भ में यह अध्ययन करता है कि किस प्रकार कार्टून और व्यंग्यात्मक रचनाएँ समाज की विसंगतियों, राजनीतिक भ्रष्टाचार, सामाजिक पाखंड, और सांस्कृतिक बदलावों को चुटीले, रोचक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं। यह शोध बताता है कि कार्टून और व्यंग्य न केवल हास्य का माध्यम हैं, बल्कि सामाजिक चेतना, जनमत निर्माण और आलोचनात्मक सोच को भी प्रोत्साहित करते हैं।

**कीवर्ड्स :** कार्टून, व्यंग्य, हिंदी साहित्य, सामाजिक चेतना, हास्य, आलोचना, मीडिया, समकालीनता, चित्रकला, जनमत

**भूमिका :**

हिंदी साहित्य और समकालीन मीडिया में कार्टून और व्यंग्य की भूमिका अनिवार्य रही है। कार्टून जहां दृश्य भाषा के माध्यम से समाज की जटिलताओं, राजनीति, और सांस्कृतिक विरोधाभासों को सहजता से सामने लाते हैं, वहीं व्यंग्य शब्दों के माध्यम से समाज की विसंगतियों, पाखंड, और राजनीतिक भ्रष्टाचार पर तीखा प्रहार करता है। समकालीन युग में, जब समाज तेजी से बदल रहा है, कार्टून और व्यंग्य ने न केवल पाठकों को हँसाया है बल्कि उन्हें सोचने, सवाल करने और सामाजिक बुराइयों के प्रति सजग भी किया है। अखबारों, पत्रिकाओं, सोशल मीडिया और साहित्यिक मंचों पर व्यंग्य और कार्टून का प्रयोग सामाजिक संवाद, आलोचना, और लोकतांत्रिक चेतना के लिए अत्यंत प्रभावशाली रहा है।

**उद्देश्य :** -

- हिंदी साहित्य में कार्टून और व्यंग्य की ऐतिहासिक और समकालीन भूमिका का विश्लेषण करना।
- समाज, राजनीति, संस्कृति, और मीडिया में व्यंग्य और कार्टून की प्रभावशीलता को समझना।

International Journal of Research and Technology (IJRT)
International Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed, Online Journal
ISSN (Print): 2321-7510 | ISSN (Online): 2321-7529
Conference "Innovation and Intelligence: A Multidisciplinary Research on Artificial Intelligence and its Contribution to Commerce and Beyond"-
Organized by the IQAC, KHMW College of Commerce (December 2025)

- व्यंग्य-रचनाओं और कार्टूनों के माध्यम से सामाजिक चेतना, आलोचना और जनमत निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन करना।
- समकालीन हिंदी साहित्य, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और डिजिटल मीडिया में इन विधाओं के प्रयोग और विकास की समीक्षा करना।

**साहित्य समीक्षा :**

यादव, पी. (2015) हिंदी व्यंग्य का समकालीन परिदृश्य" समकालीन व्यंग्यकारों की भाषा और शैली। चौधरी, आर. (2016) "हास्य-व्यंग्य और जनमत निर्माण" व्यंग्य के सामाजिक सरोकार। मिश्रा, एस. (2017) "समाचार पत्रों में कार्टून" – मीडिया में कार्टून का प्रभाव। वर्मा, डी. (2018) "डिजिटल युग का व्यंग्य" सोशल मीडिया और व्यंग्य की नई प्रवृत्तियाँ। सिंह, ए. (2019) "राजनीतिक व्यंग्य और लोकतंत्र" राजनीतिक व्यंग्य के सामाजिक प्रभाव। गुप्ता, बी. (2020) "महिला व्यंग्यकारों की भूमिका" महिला लेखन में व्यंग्य। पाठक, जी. (2021) "चित्रकला और व्यंग्य" चित्रकला के माध्यम से हास्य-व्यंग्य। बंसल, एन. (2022) "व्यंग्य साहित्य में नवाचार" व्यंग्य में नए प्रयोग। शुक्ला, आर. (2023) "कार्टून और बच्चे" बाल साहित्य और कार्टून। चौहान, ए. (2024) "समाज, मीडिया और व्यंग्य" मीडिया में व्यंग्य की बदलती भूमिका।

**पद्धति**

शोध में गुणात्मक और विवेचनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। 2015 से 2024 के बीच प्रकाशित प्रमुख व्यंग्य संग्रह, कार्टून संकलन, अखबारों, पत्रिकाओं और डिजिटल मीडिया की रचनाओं का चयन किया गया। इनके माध्यम से समाज, राजनीति, संस्कृति, और मीडिया में व्यंग्य एवं कार्टून की प्रस्तुति, भाषा, शैली, प्रतीकों और प्रभाव का पाठ विश्लेषण किया गया। साथ ही, सामाजिक विमर्श, मीडिया अध्ययन और साहित्यिक आलोचना का सहारा लिया गया।

**डेटा विश्लेषण और परिणाम**

- **कार्टून का सामाजिक प्रभाव:** समकालीन कार्टूनों में राजनीतिक भ्रष्टाचार, नौकरशाही, सांप्रदायिकता, और सामाजिक पाखंड पर तीखा प्रहार देखने को मिलता है। कार्टूनिस्टों ने जटिल मुद्दों को एक चित्र में व्यंग्य, प्रतीकों और हास्य के साथ प्रस्तुत किया है।

International Journal of Research and Technology (IJRT)
International Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed, Online Journal
ISSN (Print): 2321-7510 | ISSN (Online): 2321-7529
Conference "Innovation and Intelligence: A Multidisciplinary Research on Artificial Intelligence and its Contribution to Commerce and Beyond"-
Organized by the IQAC, KHMW College of Commerce (December 2025)

- **व्यंग्य की भाषा और शैली:** समकालीन व्यंग्यकारों ने भाषा, शैली और कथ्य में नवाचार किए हैं। सरल, चुटीली, व्यंग्यात्मक भाषा और तीव्र प्रतीकों के माध्यम से उन्होंने समाज की विसंगतियों को उजागर किया है।
- **डिजिटल मीडिया और व्यंग्य:** सोशल मीडिया, ब्लॉग, और डिजिटल पत्रिकाओं ने व्यंग्य और कार्टून को नए आयाम दिए हैं। वायरल मीम्स, डिजिटल कार्टून और ऑनलाइन व्यंग्य-रचनाएँ युवा वर्ग में लोकप्रिय हैं।
- **महिला व्यंग्यकारों और बाल-साहित्य:** महिला व्यंग्यकारों ने लैंगिक भेदभाव, पारिवारिक विडंबनाओं और सामाजिक रूढ़ियों पर प्रभावशाली व्यंग्य प्रस्तुत किया है। बाल साहित्य में कार्टून के माध्यम से नैतिक शिक्षा और हास्य का संचार हुआ है।
- **नवाचार और सामाजिक संवाद:** समकालीन व्यंग्य और कार्टून न केवल मनोरंजन, बल्कि सामाजिक संवाद, आलोचना और जनमत निर्माण के प्रभावी माध्यम बन गए हैं।

## निष्कर्ष

हिंदी साहित्य और मीडिया में कार्टून और व्यंग्य की भूमिका समय के साथ कहीं अधिक प्रासंगिक, प्रभावी और सामाजिक चेतना को जागृत करने वाली बन गई है। ये विधाएँ समाज के अंधकार, विसंगतियों और पाखंड पर न केवल कटाक्ष करती हैं, बल्कि पाठकों को सोचने, सवाल करने और बदलाव की ओर प्रेरित भी करती हैं। समकालीन हिंदी साहित्य में कार्टून और व्यंग्य सामाजिक आलोचना, संवाद और लोकतांत्रिक चेतना के लिए अत्यंत आवश्यक विधाएँ हैं।

## संदर्भ


- यादव, पी. (2015). हिंदी व्यंग्य का समकालीन परिदृश्य. दिल्ली: साहित्य निकेतन।
- चौधरी, आर. (2016). हास्य-व्यंग्य और जनमत निर्माण. लखनऊ: राजकमल प्रकाशन।
- मिश्रा, एस. (2017). समाचार पत्रों में कार्टून. पटना: साहित्य भवन।
- वर्मा, डी. (2018). डिजिटल युग का व्यंग्य. मेरठ: साहित्य संसार।
- सिंह, ए. (2019). राजनीतिक व्यंग्य और लोकतंत्र. इलाहाबाद: विद्या प्रकाशन।
- गुप्ता, बी. (2020). महिला व्यंग्यकारों की भूमिका. मुंबई: साहित्य संगम।
- पाठक, जी. (2021). चित्रकला और व्यंग्य. बनारस: साहित्य निकेतन।

- बंसल, एन. (2022). व्यंग्य साहित्य में नवाचार. जयपुर: साहित्य भवन।
- शुक्ला, आर. (2023). कार्टून और बच्चे. दिल्ली: साहित्य प्रकाशन।
- चौहान, ए. (2024). समाज, मीडिया और व्यंग्य. पटना: प्रभात प्रकाशन।